नामधारी नितनेम

हिंदी

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभम्‍ गुर प्रसादि ॥ ॥ जपु ॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥ सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुप न होवई जे लाइि रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इिक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इिकना हुकमी बखसीस इिकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अम्दरि सभु को बाहरि हुकम न कोइि ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइि ॥२॥ गावै को ताणु होवै किसै

ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगम्तरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥ साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मम्गहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अम्मत्त वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥ थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरम्जनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥

नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ गुरमुखि नादम्‍ गुरमुखि वेदम्‍ गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥ तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खम्डा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चम्गा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अम्दरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि

गुणु करे गुणवम्तिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइि न सुझई जि तिसु गुणु कोइि करे ॥७॥ सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥ सुणिऐ ईसरु बरमा इम्दु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मम्दु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिमटति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥ सुणिऐ सतु सम्तोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इिसनानु ॥ सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥ सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अम्धे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का

नासु ॥११॥ मन्ने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मन्ने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरम्जनु होइ ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइ ॥१२॥ मन्नै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मन्नै सगल भवण की सुधि ॥ मन्नै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मन्नै जम कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरम्जनु होइ ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइ ॥१३॥ मन्नै मारगि ठाक न पाइ ॥ मन्नै पति सिउ परगटु जाइ ॥ मन्नै मगु न चलै पम्थु ॥ मन्नै धरम सेती सनबम्धु ॥ ऐसा नामु निरम्जनु होइ ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइ ॥ १४॥ मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥ मन्नै परवारै साधारु ॥ मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥ मन्नै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरम्जनु होइ ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइ ॥१५॥ पम्च परवाण पम्च परधानु ॥ पम्चे पावहि दरगहि मानु ॥ पम्चे सोहहि दरि राजानु ॥ पम्चा का गुरु

एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइिआ का पूतु ॥ सम्तोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रम्गा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइि ॥ लेखा लिखिआ केता होइि ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिस ते होए लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरम्कार ॥१६॥ असम्ख जप असम्ख भाउ ॥ असम्ख पूजा असम्ख तप ताउ ॥ असम्ख गरम्थ मुखि वेद पाठ ॥ असम्ख जोग मनि रहहि उदास ॥ असम्ख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असम्ख सती असम्ख दातार ॥ असम्ख सूर मुह भख

सार ॥ असम्ख मोनि लिव लाइि तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरम्कार ॥१७॥ असम्ख मूरख अम्ध घोर ॥ असम्ख चोर हरामखोर ॥ असम्ख अमर करि जाहि जोर ॥ असम्ख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ असम्ख पापी पापु करि जाहि ॥ असम्ख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असम्ख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असम्ख निम्दक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरम्कार ॥ १८॥ असम्ख नाव असम्ख थाव ॥ अगम्म अगम्म असम्ख लोअ ॥ असम्ख कहहि सिरि भारु होइि ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि सम्जोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए

तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥ भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु

होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पम्डती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥ पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥ २२॥ सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुम्दि न जाणीअहि ॥ समुम्द साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे

तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥ अम्तु न सिफती कहणि न अम्तु ॥ अम्तु न करणै देणि न अम्तु ॥ अम्तु न वेखणि सुणणि न अम्तु ॥ अम्तु न जापै किआ मनि मम्तु ॥ अम्तु न जापै कीता आकारु ॥ अम्तु न जापै पारावारु ॥ अम्त कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अम्त न पाए जाहि ॥ एहु अम्तु न जाणै कोइि ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइि ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइि ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइि ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥ बहुता करमु लिखिआ ना जाइि ॥ वडा दाता तिलु न तमाइि ॥ केते मम्गहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बम्दि खलासी भाणै होइि ॥ होरु आखि न सकै कोइि ॥ जे को

खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥ अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भम्डार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इम्द ॥ आखहि गोपी तै गोविम्द ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥

एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥ सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असम्खा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसम्तरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इम्द इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अम्दरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती सम्तोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पम्डित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा

गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खम्ड मम्डल वरभम्डा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रम्गी रम्गी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥ मुम्दा सम्तोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिम्था कालु कुआरी काइआ जुगति डम्डा परतीति ॥ आई पम्थी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥ भुगति गिआनु दइिआ भम्डारणि घटि घटि वाजहि

नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ सम्जोगु विजोगु दुइि कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥ एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इिकु सम्सारी इिकु भम्डारी इिकु लाए दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥ आसणु लोइि लोइि भम्डार ॥ जो किछु पाइिआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥ इिक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइि

इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥ आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मम्गणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै सम्सारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥ राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रम्ग ॥ तिन के नाम अनेक अन्नत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पम्च परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइ ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥ धरम खम्ड का एहो धरमु ॥ गिआन खम्ड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसम्तर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रम्ग के वेस

॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इम्द चम्द सूर केते केते मम्डल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुम्द ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिम्द ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अम्तु न अम्तु ॥३५॥ गिआन खम्ड महि गिआनु परचम्डु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अन्नदु ॥ सरम खम्ड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥ करम खम्ड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के

लोअ ॥ करहि अन्नदु सचा मनि सोइि ॥ सच खम्डि वसै निरम्कारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खम्ड मम्डल वरभम्ड ॥ जे को कथै त अम्त न अम्त ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भाँडा भाउ अम्मत्तु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥ सलोकु ॥ पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइि दाई दाइिआ खेलै सगल जगतु ॥ चम्गिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइिआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

सो दरु रागु आसा महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असम्खा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसम्तरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इम्द्र इम्द्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अम्दरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥ रागु गूजरी महला ४ ॥ हरि के जन

सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइिआ नामु परगासि ॥१॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तट्पतासहि मिलि सम्गति गुण परगासि ॥२॥ जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइिआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि सम्गति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ जिन हरि जन सतिगुर सम्गति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धन्नु सतसम्गति जितु हरि रसु पाइिआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥ रागु गूजरी महला ५ ॥ काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जम्त उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ मेरे माधउ जी सतसम्गति

मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइिआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइि न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु सम्बाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अम्तु न पारावरिआ ॥४॥५॥ रागु आसा महला ४ सो पुरखु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सो पुरखु निरम्जनु हरि पुरखु निरम्जनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूम् जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु सम्तहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जम्त विचारा ॥१॥ तूम् घट घट अम्तरि

सरब निरन्तरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूम आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूम पारब्रहमु बेअन्तु बेअन्तु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धन्नु से धन्नु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ तेरी भगति तेरी भगति भम्डार जी भरे बिअन्त बेअन्ता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अन्नता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु

तापहि जपहि बेअम्ता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिमटति सासत जी करि किरिआ खटु करम करम्ता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवम्ता ॥४॥ तूम् आदि पुरखु अपरम्परु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूम् जुगु जुगु एको सदा सदा तूम् एको जी तूम् निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूम् आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे सटसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥ आसा महला ४ ॥ तूम् करता सचिआरु मैडा साँई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूम् देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूम् सभनी धिआइआ ॥ जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ तूम् दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥

तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जन्त सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ सम्जोगी मेलु ॥२॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइिआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइिआ ॥३॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइि ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइि ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइि ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइि ॥४॥२॥ आसा महला १ ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पम्कजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइिआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥ आसा महला ५ ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिम्द मिलण की इिह तेरी

बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसम्गति भजु केवल नाम ॥१॥ सरम्जामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु बट्था जात रम्गि माइिआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तपु सम्जमु धरमु न कमाइिआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइिआ ॥ कहु नानक हम नीच करम्मा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ सम्बति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवन्नि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवन्नि ॥४॥१॥ रागु आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ बाबा जै घरि करते कीरति

होइि ॥ सो घरु राखु वडाई तोइि ॥१॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥ रागु धनासरी महला १ ॥ गगन मै थालु रवि चम्दु दीपक बने तारिका मम्डल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइि फूलम्त जोती ॥१॥ कैसी आरती होइि ॥ भव खम्डना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजम्त भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गम्ध बिनु सहस तव गम्ध इिव चलत मोही ॥२॥ सभ महि जोति जोति है सोइि ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइि ॥ गुर साखी जोति परगटु होइि ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइि ॥३॥ हरि चरण कवल मकरम्द लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिम्ग कउ होइि जा ते तेरै

नाइि वासा ॥४॥३॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खम्डल खम्डा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइिआ मनि हरि लिव मम्डल मम्डा हे ॥१॥ करि साधू अम्जुली पुनु वडा हे ॥ करि डम्डउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अम्तरि हउमै कम्डा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डम्डा हे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खम्डा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइिआ परमेसरु बहु सोभ खम्ड ब्रहमम्डा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मम्डा हे ॥४॥४॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ करउ बेन्नती सुणहु मेरे मीता सम्त टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ मन गुर

मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ इिहु सम्सारु बिकारु सम्से महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइि पीआवै इिहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइिगो फेरा ॥३॥ अम्तरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इिहै सुखु मागै मो कउ करि सम्तन की धूरे ॥४॥५॥

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥

सलोकु ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥ सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥१॥ असटपदी ॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुम्भर एकै ॥ नामु जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिम्मटति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ काँखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन सम्गि मोहि उधारो ॥१॥ सुखमनी सुख अम्मटत प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै

॥ प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुखु न सन्तापै ॥ प्रभ का सिमरनु साध कै सन्गि ॥ सरब निधान नानक हरि रन्गि ॥२॥ प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥ प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि तट्सना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ अम्मट्त नामु रिद माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि

दसना ॥४॥ प्रभ कउ सिमरहि से धनवम्ते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवम्ते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आपि दइिआला ॥ नानक जन की मम्गै रवाला ॥५॥ प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ सम्त कृपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥ प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि गुन

बानी ॥ प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥ प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥ सुखु प्रभ सिमरन का अम्तु न पार ॥ सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥ नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥ हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥ हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कुम्ट जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरम्कारा ॥ करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥ सलोकु ॥ दीन दरद दुख भम्जना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥ असटपदी ॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नामु तेरै

समगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु समगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ सगल सटसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ लाख करोरी बमधु न परै ॥ हरि का नामु जपत निसतरै ॥ अनिक माइआ रमग तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै ॥ जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ तह हरि नामु समगि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥ छूटत नही कोटि लख बाही ॥ नामु जपत तह पारि पराही ॥ अनिक बिघन जह आइ समघारै ॥ हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ नामु जपत पावै बिस्राम ॥ हउ मैला मलु कबहु न

धोवै ॥ हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥ नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥ जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥ जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ हरि का नामु संगि उजीआरा ॥ जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै ॥४॥ भगत जना की बरतनि नामु ॥ संत जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का नामु दास की ओट ॥ हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत संत दिनु राति ॥ हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ मन तन रंगि रते रंग एकै ॥ नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥ हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ हरि कै नामि जन कउ

तटपति भुगति ॥ हरि का नामु जन का रूप रम्गु ॥ हरि नामु जपत कब परै न भम्गु ॥ हरि का नामु जन की वडिआई ॥ हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥ हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥ हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥ जनु राता हरि नाम की सेवा ॥ नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥ हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥ हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ ओति पोति जन हरि रसि राते ॥ सुन्न समाधि नाम रस माते ॥ आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥ हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ हरि की भगति मुकति बहु करे ॥ नानक जन सम्गि केते तरे ॥७॥ पारजातु इहु हरि को नाम ॥ कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा सम्त रिद वसै ॥ सम्त प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ सम्त का सम्गु

वडभागी पाईऐ ॥ सन्त की सेवा नामु धिआईऐ ॥ नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥ सलोकु ॥ बहु सासत्र बहु सिमटती पेखे सरब ढढोलि ॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥ असटपदी ॥ जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ खट सासत्र सिमटति वखिआन ॥ जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥ सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ पुन्न दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥ वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥ नउ खन्ड पटथमी फिरै चिरु जीवै ॥ महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ अगनि माहि होमत परान ॥ कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ निउली करम करै बहु आसन ॥ जैन मारग सन्जम अति साधन ॥ निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥ तउ भी

हउमै मैलु न जावै ॥ हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥ मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥ अनिक जतन करि तटसन ना ध्रापै ॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ मोहि बिआपहि माइिआ जालि ॥ अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ गोविम्द् भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ हरि का नामु जपत दुखु जाइि ॥ नानक बोलै सहजि सुभाइि ॥४॥ चारि पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की सेवा लागै ॥ जे को आपुना

दूखु मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ साधसम्गि इहि हउमै छोरै ॥ जे को जनम मरण ते डरै ॥ साध जना की सरनी परै ॥ जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥ सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ साधसम्गि जा का मिटै अभिमानु ॥ आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल सटसटि साजना ॥ सूख दूख जन सम डटसटेता ॥ नानक पाप पुन्न नही लेपा ॥६॥ निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अम्तरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन सम्गि आपि प्रभ राते ॥ तुम्री उसतति तुम ते होइ ॥ नानक

अवरु न जानसि कोइि ॥७॥ सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥ साधसम्गि दुरमति मलु हिरिआ ॥ सगल उदम महि उदमु भला ॥ हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अम्मटत बानी ॥ हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥ सलोकु ॥ निरगुनीआर इिआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥ असटपदी ॥ रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन डटसटानी ॥ जिनि तूम्‍ साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइिआ ऊपरि साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ इिहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ

नानक सीझै ॥१॥ जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता सम्गि हसहि ॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री सम्गि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर सम्गि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अम्ध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥ आदि अम्ति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ जो ठाकुरु सद सदा हज़ूरे ॥ ता कउ अम्धा जानत दूरे ॥ जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥३॥ रतनु तिआगि कउडी सम्गि रचै ॥ साचु छोडि झूठ सम्गि मचै ॥ जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस का स्रमु

करै ॥ सम्गि सहाई तिसु परहरै ॥ चम्दन लेपु उतारै धोइि ॥ गरधब प्रीति भसम सम्गि होइि ॥ अम्ध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइिआल ॥४॥ करतूति पसू की मानस जाति ॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अम्तरि मलु माइिआ ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइिआ ॥ बाहरि गिआन धिआन इिसनान ॥ अम्तरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अम्तरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अम्तरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥ सुनि अम्धा कैसे मारगु पावै ॥ करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥ कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीअै तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसनपद गावै गुम्ग ॥ जतन करै तउ भी सुर भम्ग ॥ कह पिम्गुल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ सम्गि

सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के गटह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइिआ रम्गि रसै ॥ डटड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ इिआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥ तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ जीउ पिम्डु सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥ कोइि न जानै तुमरा अम्तु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवम्त ॥ सगल समग्री तुमरै सूतट धारी ॥ तुम ते होइि सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥ सलोकु ॥ देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइि ॥ नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइि ॥१॥ असटपदी ॥ दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ एक भी न देइि दस भी

हिरि लेइ ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥ जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥ सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥ अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥ अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥ अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ उस ते चउगुन करै निहालु ॥ नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥ अनिक भाति माइआ के हेत ॥ सरपर होवत जानु अनेत ॥ बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥ ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥ बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि न आवै केह ॥ मन हरि के नाम की

प्रीति सुखदाई ॥ करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥ मिथिआ तनु धनु कुटम्बु सबाइिआ ॥ मिथिआ हउमै ममता माइिआ ॥ मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ मिथिआ रम्ग सम्गि माइिआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥ मिथिआ स्रवन पर निम्दा सुनहि ॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर तिअ रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥ मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥

बिरथा नाम बिना तनु अम्ध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगम्ध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि बट्था बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु बट्थे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ धमनि धमनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गम्ढ लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिस कै अम्तरि बसै निरम्कारु ॥ तिस की सीख तरै सम्सारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥७॥ करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ जिसु भावै तिसु

लए लड़ि लाइि ॥ थान थन्नतरि रहिआ समाइि ॥ सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥ सलोकु ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइि अह्ममेव ॥ नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥ असटपदी ॥ जिह प्रसादि छतीह अम्मत्त खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगम्धत तनि लावहि ॥ तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मम्दरि ॥ तिसहि धिआइि सदा मन अम्दरि ॥ जिह प्रसादि गटह सम्गि सुख बसना ॥ आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रम्ग रस भोग ॥ नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥ जिह प्रसादि पाट पटम्बर हढावहि ॥ तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥ मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥

जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा धिआइि केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥ जिह प्रसादि आरोग कम्चन देही ॥ लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥ नानक ता की भगति करेह ॥३॥ जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ राखु परोइि प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइि जो एक अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक

तेरी रखै ॥४॥ जिह प्रसादि करहि पुन्न बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥ जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ जिह प्रसादि तेरा सुन्दर रूपु ॥ सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥ जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥ जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ जिह प्रसादि बोलहि अम्मृत रसना ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ जिह प्रसादि सम्पूरन फलहि ॥ जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥ ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥ जिह प्रसादि तूम् प्रगटु सम्सारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन

मूड़ तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूम्‍ पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूम्‍ ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥ आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसन्न बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥ सलोकु ॥ अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥ जो जो कहै सु मुकता होइ ॥ सुनि मीता नानकु बिनवम्‍ता ॥ साध जना की अचरज कथा ॥१॥ असटपदी ॥ साध कै सम्‍गि मुख ऊजल होत ॥ साधसम्‍गि मलु सगली खोत ॥ साध कै सम्‍गि मिटै अभिमानु ॥ साध कै

सम्गि प्रगटै सुगिआनु ॥ साध कै सम्गि बुझै प्रभु नेरा ॥ साधसम्गि सभु होत निबेरा ॥ साध कै सम्गि पाए नाम रतनु ॥ साध कै सम्गि एक ऊपरि जतनु ॥ साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥ नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥ साध कै सम्गि अगोचरु मिलै ॥ साध कै सम्गि सदा परफुलै ॥ साध कै सम्गि आवहि बसि पम्चा ॥ साधसम्गि अम्मटत रसु भुम्चा ॥ साधसम्गि होइ सभ की रेन ॥ साध कै सम्गि मनोहर बैन ॥ साध कै सम्गि न कतहूम धावै ॥ साधसम्गि असथिति मनु पावै ॥ साध कै सम्गि माइआ ते भिन्न ॥ साधसम्गि नानक प्रभ सुप्रसन्न ॥२॥ साधसम्गि दुसमन सभि मीत ॥ साधू कै सम्गि महा पुनीत ॥ साधसम्गि किस सिउ नही बैरु ॥ साध कै सम्गि न बीगा पैरु ॥ साध कै सम्गि नाही को मम्दा ॥ साधसम्गि जाने परमान्नदा ॥ साध कै सम्गि नाही हउ तापु ॥ साध कै सम्गि तजै सभु आपु ॥

आपे जानै साध बडाई ॥ नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥ साध कै सम्गि न कबहू धावै ॥ साध कै सम्गि सदा सुखु पावै ॥ साधसम्गि बसतु अगोचर लहै ॥ साधू कै सम्गि अजरु सहै ॥ साध कै सम्गि बसै थानि ऊचै ॥ साधू कै सम्गि महलि पहूचै ॥ साध कै सम्गि डटड़ै सभि धरम ॥ साध कै सम्गि केवल पारब्रहम ॥ साध कै सम्गि पाए नाम निधान ॥ नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ साध कै सम्गि सभ कुल उधारै ॥ साधसम्गि साजन मीत कुटम्ब निसतारै ॥ साधू कै सम्गि सो धनु पावै ॥ जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ साधसम्गि धरम राइि करे सेवा ॥ साध कै सम्गि सोभा सुरदेवा ॥ साधू कै सम्गि पाप पलाइिन ॥ साधसम्गि अम्मटत गुन गाइिन ॥ साध कै सम्गि स्रब थान गम्मि ॥ नानक साध कै सम्गि सफल जन्नम ॥५॥ साध कै सम्गि नही कछु घाल ॥ दरसनु भेटत होत निहाल ॥ साध कै सम्गि कलूखत हरै ॥ साध कै

सम्गि नरक परहरै ॥ साध कै सम्गि ईहा ऊहा सुहेला ॥ साधसम्गि बिछुरत हरि मेला ॥ जो इछै सोई फलु पावै ॥ साध कै सम्गि न बिरथा जावै ॥ पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥ साध कै सम्गि सुनउ हरि नाउ ॥ साधसम्गि हरि के गुन गाउ ॥ साध कै सम्गि न मन ते बिसरै ॥ साधसम्गि सरपर निसतरै ॥ साध कै सम्गि लगै प्रभु मीठा ॥ साधू कै सम्गि घटि घटि डीठा ॥ साधसम्गि भए आगिआकारी ॥ साधसम्गि गति भई हमारी ॥ साध कै सम्गि मिटे सभि रोग ॥ नानक साध भेटे सम्जोग ॥७॥ साध की महिमा बेद न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ साध की उपमा रही भरपूरि ॥ साध की सोभा का नाही अम्त ॥ साध की सोभा सदा बेअम्त ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध की सोभा साध बनि आई ॥

नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥ सलोकु ॥ मनि साचा मुखि साचा सोइि ॥ अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइि ॥ नानक इिह लछण ब्रहम गिआनी होइि ॥१॥ असटपदी ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥ जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ ब्रहम गिआनी कै डटसटि समानि ॥ जैसे राज रम्क कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चम्दन लेप ॥ ब्रहम गिआनी का इिहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥ ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि होइि प्रगासु ॥ जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रभ समानि ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥ ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ ब्रहम गिआनी से जन भए ॥

नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥ ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥ आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥ ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइिआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइिआ ॥ ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी की डटसटि अम्मट्तु बरसी ॥ ब्रहम गिआनी बम्धन ते मुकता ॥ ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥ ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥ ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही धम्धा ॥ ब्रहम गिआनी ले धावतु बम्धा ॥ ब्रहम गिआनी कै होइि सु भला ॥ ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥ ब्रहम गिआनी सम्गि सगल उधारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल सम्सारु ॥४॥ ब्रहम गिआनी कै एकै रम्ग ॥ ब्रहम गिआनी कै

बसै प्रभु सम्ग ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥ ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥ ब्रहम गिआनी अहम्बुधि तिआगत ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि परमान्नद ॥ ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अन्नद ॥ ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥ ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥ ब्रहम गिआनी एक सम्गि हेता ॥ ब्रहम गिआनी कै होइ अचिम्त ॥ ब्रहम गिआनी का निरमल मम्त ॥ ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥ ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहम गिआनी

का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ ब्रहम गिआनी का अम्तु न पारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ ब्रहम गिआनी सभ सटसटि का करता ॥ ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥ ब्रहम गिआनी आपि निरम्कारु ॥ ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥ नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥ सलोकु ॥ उरि धारै जो अम्तरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥ असटपदी ॥ मिथिआ नाही रसना परस

॥ मन महि प्रीति निरम्जन दरस ॥ पर तटअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल सम्तसम्गि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निम्दा ॥ सभ ते जानै आपस कउ मम्दा ॥ गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ इम्द्री जित पम्च दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को अैसा अपरस ॥१॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसन्न ॥ बिसन की माइिआ ते होइि भिन्न ॥ करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इिछा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतन सम्गि राचै ॥ मन तन अम्तरि सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि डटड़ै अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥ भगउती भगवम्त भगति का रम्गु ॥ सगल तिआगै दुसट का सम्गु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥ साधसम्गि पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति

ऊतम होवै ॥ भगवम्त की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगउती भगवम्त कउ पावै ॥३॥ सो पम्डितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पम्डित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पम्डितु फिरि जोनि न आवै ॥ बेद पुरान सिमटति बूझै मूल ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पम्डित कउ सदा अदेसु ॥४॥ बीज मम्त्रभ सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइि ॥ साधसम्गि पावै जनु कोइि ॥ करि किरपा अम्तरि उर धारै ॥ पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ सरब रोग का अउखदु नामु ॥ कलिआण रूप मम्गल गुण गाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥ जिस कै मनि

पारब्रहम का निवासु ॥ तिस का नामु सति रामदासु ॥ आतम रामु तिसु नदरी आइिआ ॥ दास दसम्तण भाइि तिनि पाइिआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ सो दासु दरगह परवानु ॥ अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ सगल सम्गि आतम उदासु ॥ ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥ प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अन्नदु तह नही बिओगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ तैसा अम्मट्तु तैसी बिखु खाटी ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रम्कु तैसा राजानु ॥ जो वरताए साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥ पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ आपि होइि अनत तरम्ग ॥ लखे न जाहि पारब्रहम के रम्ग

॥ जैसी मति देइि तैसा परगास ॥ पारब्रहमु करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइिआल ॥ सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥६॥ सलोकु ॥ उसतति करहि अनेक जन अम्तु न पारावार ॥ नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥ असटपदी ॥ कई कोटि होए पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अम्तु न पावहि ॥१॥ कई कोटि भए अभिमानी ॥ कई कोटि अम्ध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माइिआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस

भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥ कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पम्खी सरप उपाए ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसम्तर ॥ कई कोटि देस भू मम्डल ॥ कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव दानव इम्द्र सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिमटति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जम्त ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जख्य किन्नर पिसाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर मटगाच ॥ सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥ कई कोटि पाताल के वासी ॥

कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ कई कोटि कीए धनवम्त ॥ कई कोटि माइआ महि चिम्त ॥ जह जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥ कई कोटि भए बैरागी ॥ राम नाम सम्गि तिनि लिव लागी ॥ कई कोटि प्रभ कउ खोजम्ते ॥ आतम महि पारब्रहमु लह्मते ॥ कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥ कई कोटि मागहि सतसम्गु ॥ पारब्रहम तिन लागा रम्गु ॥ जिन कउ होए आपि सुप्रसन्न ॥ नानक ते जन सदा धनि धम्नि ॥६॥ कई कोटि खाणी अरु खम्ड ॥ कई कोटि अकास ब्रहमम्ड ॥ कई कोटि होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो बिसथार ॥ कई बार पसरिओ पासार ॥ सदा सदा इकु एकम्कार ॥ कई कोटि कीने बहु भाति ॥ प्रभ

ते होए प्रभ माहि समाति ॥ ता का अम्तु न जानै कोइि ॥ आपे आपि नानक प्रभु सोइि ॥७॥ कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ तिन होवत आतम परगास ॥ कई कोटि तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक ओइि परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥ सलोकु ॥ करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइि ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइि ॥१॥ असटपदी ॥ करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ अम्तु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे अनिक रम्ग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक

सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अम्तरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक डटसटी अवरु न आवै ॥२॥ कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ निमख माहि चारि कुम्ट फिरि आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥ खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का डटसटि कछू न आवै ॥ तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ जा कउ अपुनी

करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ जीउ पिम्डु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥ इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रम्गि हसै ॥ कबहू निम्द चिम्द बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥५॥ कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूम सरब की होत रवाल ॥ कबहू होइ बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥ कबहू होइ पम्डितु करे

बख्यानु ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतम्ग होइ जीआ ॥ अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥ कबहू साधसम्गति इहु पावै ॥ उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ अम्तरि होइ गिआन परगासु ॥ उसु असथान का नही बिनासु ॥ मन तन नामि रते इक रम्गि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै सम्गि ॥ जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥ तिउ जोती सम्गि जोति समाना ॥ मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥ सलोकु ॥ सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ बडे बडे अह्मकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥ असटपदी ॥ जिस कै अम्तरि राज अभिमानु ॥ सो नरकपाती होवत सुआनु ॥ जो जानै

मै जोबनवम्तु ॥ सो होवत बिसटा का जम्तु ॥ आपस कउ करमवम्तु कहावै ॥ जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ सो मूरखु अम्धा अगिआनु ॥ करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १॥ धनवम्ता होइ करि गरबावै ॥ तटण समानि कछु सम्गि न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवम्तु ॥ खिन महि होइ जाइ भसमम्तु ॥ किसै न बदै आपि अह्मकारी ॥ धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥ गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥ सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥ कोटि करम करै हउ धारे ॥ स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ अनिक तपसिआ करे अह्मकार ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥ हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥ आपस कउ जो भला कहावै ॥ तिसहि भलाई निकटि

न आवै ॥ सरब की रेन जा का मनु होइ ॥ कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥ जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ जब लगु मोह मगन सम्गि माइ ॥ तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥ प्रभ किरपा ते बम्धन तूटै ॥ गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥ सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ तट्पति न आवै माइआ पाछै पावै ॥ अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ नह तट्पतावै खपि खपि मरै ॥ बिना सम्तोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ बट्थे सभ काजै ॥ नाम रम्गि सरब सुखु होइ ॥ बडभागी किसै परापति होइ ॥ करन करावन आपे आपि ॥ सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥ करन करावन करनैहारु ॥ इस कै हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी डट्सटि करे तैसा होइ ॥

आपे आपि आपि प्रभु सोइि ॥ जो किछु कीनो सु अपनै रम्गि ॥ सभ ते दूरि सभहू कै सम्गि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥ आपहि एक आपहि अनेक ॥ मरै न बिनसै आवै न जाइि ॥ नानक सद ही रहिआ समाइि ॥६॥ आपि उपदेसै समझै आपि ॥ आपे रचिआ सभ कै साथि ॥ आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥ उस ते भिन्न कहहु किछु होइि ॥ थान थन्नतरि एकै सोइि ॥ अपुने चलित आपि करणैहार ॥ कउतक करै रम्ग आपार ॥ मन महि आपि मन अपुने माहि ॥ नानक कीमति कहनु न जाइि ॥७॥ सति सति सति प्रभु सुआमी ॥ गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ सचु सचु सचु सभु कीना ॥ कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला तेरा रूप ॥ अति सुम्दर अपार अनूप ॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु जपै

नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥ सलोकु ॥ सम्त सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ सम्त की निम्दा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥ असटपदी ॥ सम्त कै दूखनि आरजा घटै ॥ सम्त कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ सम्त कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥ सम्त कै दूखनि नरक महि पाइ ॥ सम्त कै दूखनि मति होइ मलीन ॥ सम्त कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ सम्त के हते कउ रखै न कोइ ॥ सम्त कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥ सम्त कृपाल कृपा जे करै ॥ नानक सम्तसमगि निम्दकु भी तरै ॥१॥ सम्त के दूखन ते मुखु भवै ॥ सम्तन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ सम्तन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥ सम्त कै दूखनि तटगद जोनि किरमाइ ॥ सम्तन कै दूखनि तटसना महि जलै ॥ सम्त कै दूखनि सभु को छलै ॥ सम्त कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥ सम्त कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥ सम्त दोखी का थाउ को नाहि ॥ नानक

सम्त भावै ता ओहि भी गति पाहि ॥२॥ सम्त का निम्दकु महा अतताई ॥ सम्त का निम्दकु खिनु टिकनु न पाई ॥ सम्त का निम्दकु महा हतिआरा ॥ सम्त का निम्दकु परमेसुरि मारा ॥ सम्त का निम्दकु राज ते हीनु ॥ सम्त का निम्दकु दुखीआ अरु दीनु ॥ सम्त के निम्दक कउ सरब रोग ॥ सम्त के निम्दक कउ सदा बिजोग ॥ सम्त की निम्दा दोख महि दोखु ॥ नानक सम्त भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥ सम्त का दोखी सदा अपवितु ॥ सम्त का दोखी किसै का नही मितु ॥ सम्त के दोखी कउ डानु लागै ॥ सम्त के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ सम्त का दोखी महा अहंकारी ॥ सम्त का दोखी सदा बिकारी ॥ सम्त का दोखी जनमै मरै ॥ सम्त की दूखना सुख ते टरै ॥ सम्त के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक सम्त भावै ता लए मिलाइ ॥४॥ सम्त का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ सम्त का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥

सम्त के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ सम्त का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥ सम्त का दोखी अम्तर ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ सम्त के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ सम्त के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ नानक सम्त भावै ता लए उबारि ॥५॥ सम्त का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ सम्त का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ सम्त का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ सम्त का दोखी धरम ते रहत ॥ सम्त का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ किरतु निम्दक का धुरि ही पइआ ॥ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥ सम्त का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥ सम्त के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ सम्त का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ सम्त का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ सम्त के दोखी की

पुजै न आसा ॥ सन्त का दोखी उठि चलै निरासा ॥ सन्त कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥७॥ सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥ सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥ अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर कउनु कहै बीचारु ॥ जिस नो कृपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥ सलोकु ॥ तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥ असटपदी ॥ मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥ मारै राखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु

नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइि ॥ तिस का नामु रखु कम्ठि परोइि ॥ सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइि ॥ नानक बिघनु न लागै कोइि ॥१॥ उसतति मन महि करि निरम्कार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥ निरमल रसना अम्मट्तु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेखु ठाकुर का रम्गु ॥ साधसम्गि बिनसै सभ सम्गु ॥ चरन चलउ मारगि गोबिम्द ॥ मिटहि पाप जपीऔै हरि बिम्द ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवम्त गनी सम्सार ॥ मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ एको एकु एकु पछानै ॥ इित उत की ओहु सोझी जानै ॥ नाम सम्गि जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि निरम्जनु जानिआ ॥३॥ गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस

की जानहु तटसना बुझै ॥ साधसम्गि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ गटहसत महि सोई निरबानु ॥ एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥ जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ सो सम्तु सुहेला नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा डटसटाइिआ ॥ अपुने कारज महि आपि समाइिआ ॥ सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥ नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ आपन चलितु आप ही करै ॥ आवनु जावनु डटसटि अनडटसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ सटसटि आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि

उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खम्ड ॥ धारण धारि रहिओ ब्रहमम्ड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥ जिन प्रभु जाता सु सोभावम्त ॥ सगल सम्सारु उधरै तिन मम्त ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेलि लए किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो कृपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रम्गि ॥ सदा सदा बसै हरि सम्गि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥ सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा

जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥ असटपदी ॥ टूटी गाढनहार गुोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिम्ता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइ ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥ रूपवम्तु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवम्ता होइ किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥ जिउ मम्दर कउ थामै थम्मनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथम्मनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुर चरण

लगतु निसतरै ॥ जिउ अम्धकार दीपक परगासु ॥ गुर दरसनु देखि मनि होइि बिगासु ॥ जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू सम्गि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन सम्तन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥ मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तेरै सम्ग ॥ लपटि रहिओ रसि लोभी पतम्ग ॥ राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥ जिसु वखर कउ लैनि तू आइिआ ॥ राम नामु सम्तन घरि पाइिआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ लादि खेप सम्तह सम्गि चालु ॥ अवर तिआगि बिखिआ जम्जाल ॥ धम्नि धम्नि कहै सभु कोइि ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइि ॥ इिहु वापारु

विरला वापारै ॥ नानक ता कै सद बलिहारै ॥ ५॥ चरन साध के धोइि धोइि पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इसनानु ॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ साधसम्गि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ हरि गुन गाइि अम्मट्त रसु चाखै ॥ ओट गही सम्तह दरि आइिआ ॥ सरब सूख नानक तिह पाइिआ ॥६॥ मिरतक कउ जीवालनहार ॥ भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की डटसटी माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इिह करणी ॥ करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥ जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइि ॥ जा कै हिरदै एको

होइि ॥ सचु करणी सचु ता की रहत ॥ सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची डटसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥ नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥ सलोकु ॥ रूपु न रेख न रम्गु किछु तटहु गुण ते प्रभ भिन्न ॥ तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसन्न ॥१॥ असटपदी ॥ अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ तिस ते परै नाही किछु कोइि ॥ सरब निरम्तरि एको सोइि ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर गम्भीरु गहीरु सुजाना ॥ पारब्रहम परमेसुर गोबिम्द ॥ कृपा निधान दइिआल बखसम्द ॥ साध तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इिहु अनराउ ॥१॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो करि पाइिआ सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मम्त्रभ न जानै होरु ॥ अनद रूप मम्गल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ राज महि

राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु गटहसत महि भोगी ॥ धिआइि धिआइि भगतह सुखु पाइिआ ॥ नानक तिसु पुरख का किनै अम्तु न पाइिआ ॥ २॥ जा की लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल परोई अपुनै सूति ॥ सुमति गिआनु धिआनु जिन देइि ॥ जन दास नामु धिआवहि सेइि ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ नाना रूप नाना जा के रम्ग ॥ नाना भेख करहि इिक रम्ग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी एकम्कारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइि ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥ नाम के धारे सगले जम्त ॥ नाम के

धारे खम्ड ब्रहमम्ड ॥ नाम के धारे सिमटति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै सम्गि उधरे सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥ रूपु सति जा का सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जा की बाणी ॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥ सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै जे कोइ ॥ नामु जपत ता की गति होइ ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ आपे जानै अपनी मिति गति ॥ जिस की

सटसटि सु करणैहारु ॥ अवर न बूझि करत बीचारु ॥ करते की मिति न जानै कीआ ॥ नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥ बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ तिसु आइिआ स्वाद ॥ प्रभ कै रम्गि राचि जन रहे ॥ गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥ ओइि दाते दुख काटनहार ॥ जा कै सम्गि तरै सम्सार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै सम्गि एक लिव लागी ॥ गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥ सलोकु ॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥ असटपदी ॥ चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥ नामु सति सति धिआवनहार ॥ आपि सति सति सभ धारी ॥ आपे गुण आपे गुणकारी ॥ सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ सुरति सति सति जसु सुनता ॥ बुझनहार कउ सति सभ होइि ॥ नानक सति सति प्रभु सोइि

॥१॥ सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइिआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइिआ ॥ भै ते निरभउ होइि बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिन्न न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नाराइिन मिले नानक एक ॥२॥ ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर की सेवक के निरमल रीति ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै सम्गि ॥ प्रभ का सेवकु नाम कै रम्गि ॥ सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरम्कारा ॥ सो सेवकु जिसु दइिआ प्रभु धारै ॥ नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥ अपुने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की सरपर राखै ॥ अपने दास कउ देइि वडाई ॥ अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ अपने सेवक की

आपि पति राखै ॥ ता की गति मिति कोइि न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभि अपनी सेवा लाइिआ ॥ नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइिआ ॥४॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ जिस का सासु न काढत आपि ॥ ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भाति ॥ तिस के करतब बिरथे जाति ॥ मारै न राखै अवरु न कोइि ॥ सरब जीआ का राखा सोइि ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ बारम्‍ बार बार प्रभु जपीऔ ॥ पी अम्मटतु इिहु मनु तनु ध्रपीऔ ॥ नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइिआ ॥ तिसु किछु अवरु नाही डटसटाइिआ ॥ नामु धनु नामो रूपु रम्गु ॥ नामो सुखु हरि नाम का सम्गु ॥ नाम रसि जो जन तटपताने ॥ मन तन नामहि नामि समाने ॥ ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन

कै सद काम ॥६॥ बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ करहि भगति आतम कै चाइ ॥ प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर सिआनप सगली छाडु ॥ तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥ सलोकु ॥ सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥ असटपदी ॥ सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥

सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ सतिगुरु सिख के बम्धन काटै ॥ गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥ गुर का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥ गुर कै गटहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ सरब निधान जीअ का दाता ॥ आठ पहर पारब्रहम

रम्गि राता ॥ ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ एकहि आपि नही कछु भरमु ॥ सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥ नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥ सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गति निरमल रीति ॥ भेटत सम्गि राम गुन रवे ॥ पारब्रहम की दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि सम्तोखु आतम पतीआने ॥ पूरा गुरु अख्यओ जा का मम्त्र ॥ अम्मटत डटसटि पेखै होइि सम्त ॥ गुण बिअम्त कीमति नही पाइि ॥ नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइि ॥४॥ जिहबा एक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बम्दन नित करहि ॥ चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥ इिहु हरि रसु

पावै जनु कोइि ॥ अम्मटतु पीवै अमरु सो होइि ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर हरि का नामु लेइि ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइि ॥ मोह माइिआ कै सम्गि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ अम्धकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥ तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइिआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अम्देसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइि बसे ॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥ साधसम्गि जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥ निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥ कला धारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥ अपुनी कीमति आपे पाए ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइि ॥ सरब निरम्तरि एको सोइि ॥ ओति पोति

रविआ रूप रम्ग ॥ भए प्रगास साध कै सम्ग ॥ रचि रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥ सलोकु ॥ साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥ असटपदी ॥ सम्त जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु सम्चहु होवहु भगवम्त ॥ सम्त जना का निरमल मम्त ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥ जिसु धन कउ चारि कुम्ट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ सो सुखु साधू सम्गि परीति ॥ जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥ अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु मिटै

हरि अवखधु लाइि ॥ सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥ जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥ मनु परबोधहु हरि कै नाइि ॥ दह दिसि धावत आवै ठाइि ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइि ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइि ॥ कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइि आस ॥ भगति भाइि आतम परगास ॥ तितु घरि जाइि बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥ ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै सो काचो काचा ॥ आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इिउ रतन जनम का होइि उधारु ॥ हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिम्मटति सासत बेद बीचारे ॥ हरि की भगति करहु मनु लाइि ॥ मनि बम्छत नानक फल पाइि ॥४॥ सम्गि न चालसि तेरै धना ॥ तूम् किआ लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटम्ब अरु बनिता ॥ इिन ते

कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रम्ग माइिआ बिसथार ॥ इिन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा डम्फु झूठु पासारी ॥ जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥ गुर की मति तूम् लेहि इिआने ॥ भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइि तुम्ारो चीत ॥ चरन कमल राखहू मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ सार भूत सति हरि को नाउ ॥ सहजि सुभाइि नानक गुन गाउ ॥६॥ गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ बिनसि जाइि हउमै बिखु फैलु ॥ होहि अचिम्तु बसै सुख नालि ॥ सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ छाडि सिआनप सगली मना ॥ साधसम्गि पावहि सचु धना ॥ हरि पूम्जी सम्चि करहु बिउहारु ॥ ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब निरम्तरि एको

देखु ॥ कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥ एको जपि एको सालाहि ॥ एकु सिमरि एको मन आहि ॥ एकस के गुन गाउ अन्नत ॥ मनि तनि जापि एक भगवम्त ॥ एको एकु एकु हरि आपि ॥ पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ अनिक बिसथार एक ते भए ॥ एकु अराधि पराछत गए ॥ मन तन अम्तरि एकु प्रभु राता ॥ गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१६॥ सलोकु ॥ फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइि ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइि ॥१॥ असटपदी ॥ जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ साध जना की मागउ धूरि ॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ एक ओट एको आधारु ॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥ प्रभ की ड्टसटि महा सुखु होइि ॥

हरि रसु पावै बिरला कोइि ॥ जिन चाखिआ से जन तटपताने ॥ पूरन पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस रम्गि ॥ उपजै चाउ साध कै सम्गि ॥ परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ अम्तरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ बडभागी जपिआ प्रभु सोइि ॥ नानक नामि रते सुखु होइि ॥२॥ सेवक की मनसा पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइिओ दइिआलु ॥ सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ बम्धन काटि मुकति जनु भइिआ ॥ जनम मरन दूखु भ्रमु गइिआ ॥ इिछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद सम्गि हज़ूरी ॥ जिस का सा तिनि लीआ मिलाइि ॥ नानक भगती नामि समाइि ॥३॥ सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै कीआ जानै ॥ सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै जि बिखु

ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु इहै बुझाइिआ ॥ प्रभु अपना नानक जन धिआइिआ ॥४॥ साजन सम्त करहु इिहु कामु ॥ आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ भगति भाइि तरीअै सम्सारु ॥ बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥ बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ सगल दूख का होवत नासु ॥ नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥ उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ मन तन अम्तरि इिही सुआउ ॥ नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइि ॥ मनु बिगसै साध चरन धोइि ॥ भगत जना कै मनि तनि रम्गु ॥ बिरला कोऊ पावै सम्गु ॥ एक बसतु दीजै करि मइिआ ॥ गुर प्रसादि नामु जपि लइिआ ॥ ता की उपमा कही न जाइि ॥ नानक रहिआ सरब समाइि ॥६॥ प्रभ बखसम्द दीन दइिआल ॥ भगति वछल सदा किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिम्द गुपाल ॥

सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ भगति भाइ लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥ सरब बैकुम्ठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु भोजन कापर सम्गीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवम्त ॥ हिरदै बसे पूरन गुर मम्त ॥ साधसम्गि प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥ सलोकु ॥ सरगुन निरगुन निरम्कार सुन्न समाधी आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥ असटपदी ॥ जब अकारु इहु कछु न डटसटेता ॥ पाप पुन्न तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुन्न समाधि ॥ तब बैर बिरोध किसु सम्गि कमाति ॥ जब इस का बरनु चिहनु न जापत

॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥ आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बम्ध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ जब एकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइि ॥ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइि ॥ जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ आपन चलित आपि करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥ अबिनासी सुख आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभु सोइि ॥ तब जम की त्रास कहहु किसु होइि ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥ जब नाथ निरम्जन अगोचर अगाधे ॥ तब कउन छुटे कउन बम्धन बाधे ॥ आपन आप आप ही

अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥ जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ जह निरन्जन निरन्कार निरबान ॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति सन्गि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु तटपतावै ॥ करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥ जब अपनी सोभा आपन सन्गि बनाई ॥ तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऔ चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥ जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥

आपस कउ आपहि आदेसु ॥ तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ जह एकहि एक एक भगवम्ता ॥ तह कउनु अचिम्तु किसु लागै चिम्ता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ बहु बेअम्त ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥ जह आपि रचिओ परपम्चु अकारु ॥ तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥ पापु पुन्नु तह भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बम्छावत ॥ आल जाल माइआ जम्जाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु सम्कोचै तउ नानक एकै ॥७॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासारु सम्त परतापि ॥ दुहू पाख का आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग ॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ जिसु

भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥ सलोकु ॥ जीअ जम्त के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह डटसटार ॥१॥ असटपदी ॥ आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता सटसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते भिन्न नही किछु होइि ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइि ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ सचु नामु सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल सटसटि का जेता ॥१॥ जीअ जम्त्र सभ ता कै हाथ ॥ दीन दइिआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइि न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइि ॥ सभ सिरि एकु निरम्जन राइि ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥ अम्तरि बाहरि जानहु साथि ॥ गुन निधान बेअम्त

अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ २॥ पूरन पूरि रहे दइआल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अम्तरजामी रहिओ बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥ मन अम्तरि बिस्वासु करि मानिआ ॥ करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥ जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ तिस की आस न बिरथी जाइ ॥ सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥ इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥ जा कै मनि बसिआ निरम्कारु ॥ बम्धन तोरि भए निरवैर ॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥ साधसम्गि मिलि करहु अन्नद ॥ गुन गावहु प्रभ परमान्नद ॥ राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ द्रुल्लभ देह का करहु उधारु ॥ अम्मटत

बचन हरि के गुन गाउ ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु बिनसै अम्धेरा ॥ सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु अम्तरि उरि धारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥ तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिम्ता जाइ मिटै अहम्कारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥७॥ मति पूरी अम्म्रितु जा

की डटसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत सटसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुम्दर हरि रूप ॥ धन्नु सेवा सेवकु परवानु ॥ अम्तरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥ साधसम्गि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥ सलोकु ॥ गिआन अम्जनु गुरि दीआ अगिआन अम्धेर बिनासु ॥ हरि किरपा ते सम्त भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥ असटपदी ॥ सम्तसम्गि अम्तरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥ अनिक रम्ग नाना डटसटाहि ॥ नउ निधि अम्म्रटतु प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्रामु ॥ सुन्न समाधि अनहत तह नाद ॥ कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥ सो अम्तरि सो बाहरि अन्नत ॥ घटि

घटि बिआपि रहिआ भगवम्त ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसम्तर माहि ॥ चारि कुम्ट दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिन्न नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ बेद पुरान सिम्मटति महि देखु ॥ ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर परसादि भरम का नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥ सम्त जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥ सम्त जना कै हिरदै सभि धरम ॥ सम्त जना सुनहि सुभ बचन ॥ सरब बिआपी राम सम्गि रचन ॥ जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ सति बचन साधू सभि कहत ॥ जो जो होइ सोई

सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ अम्तरि बसे बाहरि भी ओही ॥ नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥ तिसु भावै ता एकम्कारु ॥ अनिक कला लखी नह जाइ ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥ आपे आपि आप भरपूरि ॥ अम्तरगति जिसु आपि जनाए ॥ नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥ सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥ आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी कीनी माइआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥ इस ते होइ सु नाही बुरा ॥ ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अति

नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ ओति पोति आपन सम्गि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइि ॥ दूसर होइि त सोझी पाइि ॥ तिस का कीआ सभु परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इिहु जानु ॥७॥ जो जानै तिसु सदा सुखु होइि ॥ आपि मिलाइि लए प्रभु सोइि ॥ ओहु धनवम्तु कुलवम्तु पतिवम्तु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवम्तु ॥ धन्नु धन्नु धन्नु जनु आइिआ ॥ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइिआ ॥ जन आवन का इिहै सुआउ ॥ जन कै सम्गि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै सम्सारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥ सलोकु ॥ पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ नानक पूरा पाइिआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥ असटपदी ॥ पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ सासि सासि सिमरहु गोबिम्द ॥ मन अम्तर की उतरै चिम्द ॥

आस अनित तिआगहु तरम्ग ॥ सम्त जना की धूरि मन मम्ग ॥ आपु छोडि बेनती करहु ॥ साधसम्गि अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भम्डार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ खेम कुसल सहज आन्नद ॥ साधसम्गि भजु परमान्नद ॥ नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ गुन गोबिम्द अम्मटत रसु पीउ ॥ चिति चितवहु नाराइिण एक ॥ एक रूप जा के रम्ग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन दइिआल ॥ दुख भम्जन पूरन किरपाल ॥ सिमरि सिमरि नामु बारम्‍ बार ॥ नानक जीअ का इिहै अधार ॥२॥ उतम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आपि तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवनु सफलु ता का सम्गु ॥ जा कै मनि लागा हरि रम्गु ॥ जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महाँत कै माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥ सरनि जोगु सुनि

सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥ अम्मटत नामु साधसम्गि लैन ॥ सुप्रसन्न भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जम्जाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥ करि प्रसादु दइिआ प्रभि धारी ॥ नानक निबही खेप हमारी ॥४॥ प्रभ की उसतति करहु सम्त मीत ॥ सावधान एकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिम्द गुन नाम ॥ जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब इिछा ता की पूरन होइि ॥ प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइि ॥ सभ ते ऊच पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि चलै जनु सोइि ॥ नानक जिसहि परापति होइि ॥५॥ खेम साँति रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥ बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥ गिआनु स्रेसट ऊतम इिसनानु ॥ चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ सुम्दरु चतुरु तत का बेता ॥

समदरसी एक डटसटेता ॥ इिह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥ इिहु निधानु जपै मनि कोइि ॥ सभ जुग महि ता की गति होइि ॥ गुण गोबिम्द नाम धुनि बाणी ॥ सिमटति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मताँत केवल हरि नाम ॥ गोबिम्द भगत कै मनि बिस्राम ॥ कोटि अप्राध साधसम्गि मिटै ॥ सम्त कृपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ जिसु मनि बसै सुनै लाइि प्रीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अम्मटत ता की बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ नानक इिह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥

बारह माहा माँझ महला ५ घरु ४

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुम्ट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कम्तु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तम्बोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कम्त विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की बेन्नतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी समगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥ चेति गोविम्दु अराधीऐ होवै अन्नदु घणा ॥ सम्त जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु

आपणा आए तिसहि गणा ॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिन्ना भागु मणा ॥ हरि दरसन कम्उ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइि लगा ॥२॥ वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइिआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न सम्गि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धम्धै मोहु ॥ इिकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइि ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइि ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइि ॥ वैसाखु सुहावा ताँ लगै जा सम्तु भेटै हरि सोइि ॥ ३॥ हरि जेठि जुड़म्दा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवम्नि ॥ हरि सजण दावणि

लगिआ किसै न देई बम्नि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही सम्नि ॥ रम्ग सभे नाराइणै जेते मनि भावम्नि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करम्नि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धम्नि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवम्नि ॥ साधू सम्गु परापते नानक रम्ग माणम्नि ॥ हरि जेठु रम्गीला तिसु धणी जिस कै भागु मथम्नि ॥४॥ आसाड़ु तपम्दा तिसु लगै हरि नाहु न जिन्ना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस सम्दी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुह्मदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥ सावणि सरसी कामणी चरन कमल

सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रम्गि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रम्ग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अम्मत्त बूम्द सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ सम्गि मउलिआ सम्म्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइिआ ह्मउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइिआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥ भादुइि भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइिआ कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइिनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा सम्दड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइि नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ सम्त सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से तटपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ जो हरि कम्ति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसम्दीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि सम्जोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै ताँ उतरहि सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब

बम्दी मोच ॥ कतिक होवै साधसम्गु बिनसहि सभे सोच ॥९॥ मम्घिरि माहि सोह्मदीआ हरि पिर सम्गि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ सम्गि साध सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कम्ठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मम्घिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ पोखि तुखारु न विआपई कम्ठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिम्द दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविम्द गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न

विछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥ माघि मजनु सम्गि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुन्न जीअ दइआ परवानु ॥ जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ माघि सुचे से काँढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ फलगुणि अन्नद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥ सम्त सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि

सहीआ मम्गलु गावही गीत गोविम्द अलाइि ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइि ॥ हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइि ॥ सम्सार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइि ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइि ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइि ॥१३॥ जिनि जिनि नामु धिआइिआ तिन के काज सरे ॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अम्दरि एकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मम्गै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छम्त घरु ४ ॥

हरि अम्मटत भिन्ने लोइणा मनु प्रेमि रतन्ना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइिआ कम्चनु सोविन्ना ॥ गुरमुखि रम्गि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिन्ना ॥ जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धन्ना ॥१॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी पीर पिरम्म की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥२॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविम्द रम्गा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइिआ हरि भगति इिक मम्गा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरम्गा ॥ मिलि सम्त जना हरि पाइिआ नानक सतसम्गा ॥३॥ दीन दइिआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइिआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि

पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥ पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥ गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥३॥ गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे ॥

जिना गुरबाणी मनि भाईआ अम्मटति छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइिआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइिआ नानकु हरि इके ॥४॥६॥१६॥ आसा महला ४ ॥ हरि अम्मट्त भगति भम्डार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइि हरि रासे ॥ धनु धन्नु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानकु गुरु तिन्ी पाइिआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥ सचु साहु हमारा तूम् धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भाँडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भाँडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भम्डारा ॥ २॥ हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूम् अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु

है हरि दास पनिहारो ॥३॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूम्‌ गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि काँढिआ हरि पैज रखाए ॥४॥१०॥१७॥ आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अम्धेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥ जिनी अैसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलद्भभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥२॥ तूम्‌ हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन्‌

तूम्ह मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥३॥ कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अम्तरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥ आसा महला ४ ॥ जिन अम्तरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि सम्ता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥ जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुरसिख्नी सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥ गुरसिखा

मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइि लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइि घनेरी ॥ जन नानक हरि पुन्नु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुन्न केरी ॥३॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिना मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइिआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१६॥ आसा महला ४ ॥ जिना भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु डटड़ावै राम राजे ॥ तिस की तट्सना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइिदे तिन् जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइिआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु

पुरखु मनाइिआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिनी सतिगुरु पिआरा सेविआ तिना सुखु सद होई ॥ जिना नानकु सतिगुरु भेटिआ तिना मिलिआ हरि सोई ॥२॥ जिना अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन की निंदा कोई किआ करे जिन हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइिआ हरि रखणहारा ॥३॥ हरि जुगु जुगु भगत उपाइिआ पैज रखदा आइिआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइिआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइिआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइिआ ॥४॥१३॥२०॥

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभम्‍ गुर प्रसादि ॥

आसा महला १ ॥

वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुम्डे अस राजै की धुनी ॥

सलोकु मः १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥ महला २ ॥ जे सउ चम्दा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ एते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अम्धार ॥२॥ मः १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुम्ञे अम्दरि खेत ॥ खेतै अम्दरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥ पउड़ी ॥ आपीनै् आपु साजिओ आपीनै् रचिओ नाउ

॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥ सलोकु मः १ ॥ सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो मरि जम्मे सु कचु निकचु ॥१॥ मः १ ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे

आपि ॥ नानक कार न कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥ महला २ ॥ इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥ पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥ सलोक मः १ ॥ विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ विसमादु नागे फिरहि जंत ॥ विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ विसमादु अगनी

खेडहि विडाणी ॥ विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ विसमादु सम्जोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥ मः १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा पैन्णु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रम्गी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसन्तरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूम् कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अम्दरि वेखै वरतै

ताको ताकु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि सम्गलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ मनि अम्धै जनमु गवाइआ ॥३॥ सलोक मः १ ॥ भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इम्दु फिरै सिर भारि ॥ भै विचि राजा धरम दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चम्दु ॥ कोह करोड़ी चलत न अम्तु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै विचि आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ नानक निरभउ निरम्कारु सचु एकु ॥१॥ मः १ ॥ नानक निरभउ निरम्कारु होरि केते राम रवाल ॥ केतीआ कन्ह

कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मम्गते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइि कढहि बाजार ॥ गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ लख टकिआ के मुम्दड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥ गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइिआ ॥ एहु जीउ बहुते जनम भरम्मिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइिआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइिआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइिआ जिन्ी विचहु आपु गवाइिआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइिआ ॥४॥ सलोक मः १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कन्न् गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसम्तरु चम्दु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जम्जाल ॥ नानक मुसै

गिआन विहूणी खाइ गइिआ जमकालु ॥१॥ मः १ ॥ वाइिनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइिनि फेरन्ि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइि ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइि ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरम्कारु सचु नामु ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिन्नी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अन्नतु ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पम्खी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि भवाईअहि जम्त ॥ नानक भउदिआ गणत न अम्त ॥ बम्धन बमधि भवाए सोइि ॥ पइिऐ किरति नचै सभु कोइि ॥ नचि नचि हसहि चलहि से रोइि ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ

॥२॥ पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरम्कारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिम्डु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चम्गा आपणा करि पुन्नहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥ सलोक मः १ ॥ मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बम्दे से जि पवहि विचि बम्दी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुम्नि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरम्जन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि सम्तोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे दे मम्गहि सहसा गूणा सोभ करे सम्सारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥

ओदि जि आखहि सु तूम्है जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अन्नदि रहहि दिनु राती गुणवम्तिआ पा छारु ॥१॥ मः १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भाँडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अम्गिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥ पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥ सलोक मः १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जम्मिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ

॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुन्न वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइिआ हउ विचि छाइिआ ॥ हउमै करि करि जम्त उपाइिआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बम्धना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु सम्जमि इिह जाइि ॥ हउमै एहो हुकमु है पइिऐ किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इिसु माहि ॥ किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इितु सम्जमि दुख जाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ सेव कीती

सम्तोखीङ्ी जिन्ी सचो सचु धिआइिआ ॥ ओन्ी मम्दै पैरु न रखिओ करि सुकृतु धरमु कमाइिआ ॥ ओन्ी दुनीआ तोड़े बम्धना अन्नु पाणी थोड़ा खाइिआ ॥ तूम् बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइिआ ॥ वडिआई वडा पाइिआ ॥७॥ सलोक मः १ ॥ पुरखाँ बिरखाँ तीरथाँ तटाँ मेघाँ खेताँह ॥ दीपाँ लोआँ मम्डलाँ खम्डाँ वरभम्डाँह ॥ अम्डज जेरज उतभुजाँ खाणी सेतजाँह ॥ सो मिति जाणै नानका सराँ मेराँ जम्ताह ॥ नानक जम्त उपाइि कै सम्माले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिम्ता भि करणी ताह ॥ सो करता चिम्ता करे जिनि उपाइिआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥ मः १ ॥ लख नेकीआ चम्गिआईआ लख पुन्ना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथाँ सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण सम्गराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख

गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूम्‍ जिनि सचो सचु वरताइिआ ॥ जिसु तूम्‍ देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्‍ी सचु कमाइिआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइिआ जिन्‍ कै हिरदै सचु वसाइिआ ॥ मूरख सचु न जाणन्‍ी मनमुखी जनमु गवाइिआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइिआ ॥८॥ सलोकु मः १ ॥ पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इिक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥ मः १ ॥ लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥

अन्नु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥ मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अन्धै पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अन्धु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥ हरि का नामु मन्नि वसाए ॥ नानक नदरि करे सो पाए ॥ आस अन्देसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥२॥ पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्नी धावदे ॥ इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ तिन्ह मन्गा जि तुझै धिआइदे ॥ ६॥ सलोकु मः १ ॥ कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु सन्सारु ॥ कूड़ु मन्डप कूड़ु

माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्णहारु ॥ कूड़ु काइिआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥ मः १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइि ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइि ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइिआ साधि कै विचि देइि करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइि ॥ दइिआ जाणै जीअ की किछु पुन्नु दानु करेइि ॥ सचु ताँ परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइि दारू पाप कढै धोइि ॥

नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्‍ा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥ सलोकु मः १ ॥ सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रम्गु न सोइ ॥ भै विचि खुम्बि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥ मः १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥ अम्धी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु

॥ मूरख पम्डित हिकमति हुजति सम्जै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु करहि गावावहि मम्गहि मोख दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥ पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥ मः १ ॥ वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति पवै चम्गे सेई केइ ॥३॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ एना जम्ता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूम्‍ मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥ सलोकु मः १ ॥ दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूम्‍ करता करणा मै नाही जा हउ करी न

होई ॥१॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अम्तु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूम् सचा साहिबु सिफति सुआलि्उ जिनि कीती सो पारि पइिआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥ मः २ ॥ जोग सबदम् गिआन सबदम् बेद सबदम् ब्राहमणह ॥ खत्री सबदम् सूर सबदम् सूद्र सबदम् परा कृतह ॥ सरब सबदम् एक सबदम् जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरम्जन देउ ॥३॥ मः २ ॥ एक कृसनम् सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरम्जन देउ ॥४॥ मः १ ॥ कुम्भे बधा जलु रहै जल बिनु कुम्भु न होइि ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइि ॥५॥ पउड़ी ॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ

पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइिआ हारीऐ ॥ पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥ सलोकु मः १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु सम्तोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥ मः १ ॥ साम कहै सेतम्बरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइि लइिऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखम्तरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चम्द्रावलि कान् कृसनु जादमु भइिआ ॥ पारजातु गोपी लै आइिआ बिम्द्राबन महि रम्गु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइिआ ॥ नील बसत्र ले कपड़े पहिरे

तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन् चार वीचार ॥ भउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखम्तरु पाए ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अम्जनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥ सलोकु मः १ ॥ सिम्मल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कम्मि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चम्गिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो ह्मता मिरगाहि ॥ सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥ मः १ ॥ पड़ि

पुसतक सम्धिआ बादम्‍ ॥ सिल पूजसि बगुल समाधम्‍ ॥ मुखि झूठ बिभूखण सारम्‍ ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारम्‍ ॥ गलि माला तिलकु लिलाटम्‍ ॥ दुइि धोती बसत्र कपाटम्‍ ॥ जे जाणसि ब्रहमम्‍ करमम्‍ ॥ सभि फोकट निसचउ करमम्‍ ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥ पउड़ी ॥ कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अम्दरि जावणा ॥ मम्दा चम्गा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ न्नगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥ सलोकु मः १ ॥ दइिआ कपाह सम्तोखु सूतु जतु गम्ढी सतु वटु ॥ एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु तुटै ना मलु लगै ना एहु जलै न जाइि ॥ धन्नु सु माणस नानका जो गलि चले पाइि ॥ चउकड़ि मुलि अणाइिआ बहि चउकै पाइिआ ॥ सिखा कम्नि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ

॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥ मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइि ॥ कुहि बकरा रिंन्हि खाइिआ सभु को आखै पाइि ॥ होइि पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥ मः १ ॥ नाइि मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥ मः १ ॥ तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ तगु न पैरी तगु न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥ मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइि दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइिसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु

मनाइसी ॥ हुकमि मम्निऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ खसमै भावै सो करे मनहु चिम्दिआ सो फलु पाइसी ॥ ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥ सलोक मः १ ॥ गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछाँ खाई ॥ अम्तरि पूजा पड़हि कतेबा सम्जमु तुरका भाई ॥ छोडीले पाखम्डा ॥ नामि लइऐ जाहि तरम्दा ॥१॥ मः १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥ उन्हा भि आवहि ओई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै

चउका कढी कार ॥ उपरि आइि बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इिहु अन्नु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥ पउड़ी ॥ चितै अम्दरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइिदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइिदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धम्धै लाइिदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइिदा ॥ दरि मम्गनि भिख न पाइिदा ॥१६॥ सलोकु मः १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइि ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइि ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइि ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइि ॥१॥ मः १ ॥ जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइि खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिम्डा धोइि ॥ सूचे सेई नानका

जिन मनि वसिआ सोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रम्गी हरम सवारिआ ॥ कोठे मम्डप माड़ीआ लाइि बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइिसि खाइिआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥ सलोकु मः १ ॥ जे करि सूतकु मन्नीऔ सभ तै सूतकु होइि ॥ गोहे अतै लकड़ी अम्दरि कीड़ा होइि ॥ जेते दाणे अन्न के जीआ बाझु न कोइि ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइि ॥ सूतकु किउ करि रखीऔ सूतकु पवै रसोइि ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइि ॥१॥ मः १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर तट्अ पर धन रूपु ॥ कन्नी सूतकु कम्नि पै लाइितबारी खाहि ॥ नानक ह्मसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥ मः १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइि ॥ जम्मणु

मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पवित्रभ है दितोनु रिजकु सम्बाहि ॥ नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ तिना सूतकु नाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥ सलोकु मः १ ॥ पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अन्नु देवता पाणी देवता बैसम्तरु देवता लूणु पम्जवा पाइिआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥ मः १ ॥

भम्डि जम्मीऐ भम्डि निम्मीऐ भम्डि मम्गणु वीआहु ॥ भम्डहु होवै दोसती भम्डहु चलै राहु ॥ भम्डु मुआ भम्डु भालीऐ भम्डि होवै बम्धानु ॥ सो किउ मम्दा आखीऐ जितु जम्महि राजान ॥ भम्डहु ही भम्डु ऊपजै भम्डै बाझु न कोइि ॥ नानक भम्डै बाहरा एको सचा सोइि ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥ पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा सम्ढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइितु गारबि ह्मढीऐ ॥ मम्दा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥ सलोकु मः १ ॥ नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइि ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइि ॥ फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइि ॥ फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइि ॥१॥ मः १ ॥ अम्दरहु

झूठे पैज बाहरि दुनीआ अम्दरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन् पटु अम्दरि बाहरि गुदड़ु ते भले सम्सारि ॥ तिन् नेहु लगा रब सेती देखने वीचारि ॥ रम्गि हसहि रम्गि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मम्गा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्ा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥ सलोकु महला २ ॥ एहु किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु काँढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चम्गै चम्गा करि मन्ने मम्दै मम्दा होइ ॥ आसकु

एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइि ॥१॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुम्ढहु घुथा जाइि ॥ नानक दोवै कूड़ीआ थाइि न काई पाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्ालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मम्दा मूलि न कीचई दे लम्मी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥ सलोकु महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइि सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥ महला २ ॥ जो जीइि होइि सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मम्गै अम्मत्रितु वेखहु एहु निआउ ॥२॥ महला २ ॥ नालि इिआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अम्दरि वसतु

समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अम्दरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥ महला २ ॥ होइ इआणा करे कम्मु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चम्गी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अम्दरि पाइ ॥ वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥ महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥

नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥
पउड़ी ॥ नानक अम्त न जापन्ी हरि ता के पारावार
॥ आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥
इकन्ा गली जम्जीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर
॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥
नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार
॥२३॥ सलोकु मः १ ॥ आपे भाँडे साजिअनु आपे
पूरणु देइ ॥ इकन्ी दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्ि
चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्ि इकि उपरि रहनि
खड़े ॥ तिन्ा सवारे नानका जिन् कउ नदरि करे ॥१॥
महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि
॥ तिसु विचि जम्त उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥
किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥
पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु
न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु
सम्बाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिन्नै पाइ

॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु

रामकली महला ३ अन्नदु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अन्नदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अन्नदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अम्गीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मन्न मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी

नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि साँति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु सम्तहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पम्च सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पम्च दूत तुधु वसि कीते कालु कम्टकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइिआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइि नाही कृपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि

सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥ आन्नदु आन्नदु सभु को कहै आन्नदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आन्नदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अम्जनु सारिआ ॥ अम्दरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अन्नदु है आन्नदु गुर ते जाणिआ ॥७॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी मनु भइिआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥ आवहु सम्त पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मम्निऐ पाईऐ ॥ हुकमु मम्निहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु

सुणहु सम्तहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥ ए मन चम्चला चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मन्न मेरिआ ॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥ माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै नानकु मन चम्चल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥ ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एहु कुटम्बु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा कम्मु मूले न कीचै जितु अम्ति पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥ अगम अगोचरा तेरा अम्तु न पाइआ ॥ अम्तो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जम्त सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि

जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगम्मु है तेरा अम्तु न पाइआ ॥१२॥ सुरि नर मुनि जन अम्मटतु खोजदे सु अम्मटतु गुर ते पाइआ ॥ पाइआ अम्मटतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ जीअ जम्त सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अह्मकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अम्मटतु गुर ते पाइआ ॥१३॥ भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अह्मकारु तजि तटसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खम्निअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि

हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥ एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मम्नि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥ पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटम्ब सहित सिउ पवितु सम्गति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मम्नि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥ करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै सम्जमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु सम्जमि

धोता जाए ॥ मन्नु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइि ॥ कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इिहु सहसा इिव जाइि ॥१८॥ जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१६॥ जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइि पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मन्नु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥ जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अम्तर आतमै समाले ॥ आपु छडि

सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु सम्तहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥ जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अम्मटतु सदा रहहु हरि रम्गि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कच्ची आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न

जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए खाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥ गुर का सबदु रतन्नु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मन्नु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥ सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बम्धन होवै मुकतु सबदु मम्नि वसाए ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥ सिमटति सासत्र पुन्न पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी सम्सारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ

बोलहि अम्मटत बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥ माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥ जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जम्मिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी तटसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न

पाइिआ जाइि किसै विटहु रहे लोक विललाइि ॥ अैसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीअै विचहु आपु जाइि ॥ जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइि ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइि ॥३०॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥ ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइि ॥ पिआस न जाइि होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइि ॥ हरि रसु पाइि पलै पीअै हरि रसु बहुड़ि न तट्सना लागै आइि ॥ एहु हरि रसु करमी पाईअै सतिगुरु मिलै जिसु आइि ॥ कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइि ॥३२॥ ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि

जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ कहै नानकु सट्सटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥३३॥ मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मम्गलु गाउ सखी गट्हु मम्दरु बणिआ ॥ हरि गाउ मम्गलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥ ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर परसादी हरि मम्नि वसिआ पूरबि

लिखिआ पाइिआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइिआ ॥३५॥ ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु सम्सारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइिआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अम्ध से सतिगुरि मिलिअै दिब ड्टसटि होई ॥३६॥ ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अम्मट्त नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥ हरि जीउ गुफा अम्दरि रखि कै वाजा पवणु वजाइिआ ॥ वजाइिआ वाजा पउण नउ दुआरे

परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइिआ ॥ गुरदुआरै लाइि भावनी इिकना दसवा दुआरु दिखाइिआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अम्तु न जाई पाइिआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अम्दरि रखि कै वाजा पवणु वजाइिआ ॥३८॥ एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इिहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइिआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग सम्ताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ सम्त साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवम्ति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

रामकली सदु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जगि दाता सोइि भगति वछलु तिहु लोइि जीउ ॥ गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइि जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरू अम्गद परम पदवी पावहे ॥ आइिआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइिआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइिआ ॥१॥ हरि भाणा गुर भाइिआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरम्जनो ॥ अम्ति चलदिआ होइि बेली जमदूत कालु निखम्जनो ॥ सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइिआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥२॥ मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि

जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइिआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आन्नद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥३॥ सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइिआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइिआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइिआ ॥ सभि सिख बम्धप पुत भाई रामदास पैरी पाइिआ ॥४॥ अम्ते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पम्डित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रम्गु गुर भावए ॥ पिम्डु

पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥ हरि भाइिआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥५॥ सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइि जीउ ॥ मोहरी पुतु सनमुखु होइिआ रामदासै पैरी पाइि जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइिआ ॥ हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइि जीउ ॥ कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइि जीउ ॥६॥१॥

सूही महला ४ ॥

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम ड्टड़ाइिआ बलि राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु ड्टड़हु पाप तजाइिआ बलि राम जीउ ॥ धरमु ड्टड़हु हरि नामु धिआवहु सिमटति नामु ड्टड़ाइिआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइिआ ॥ सहज अन्नदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइिआ ॥ जनु कहै नानकु लाव पहिली आरम्भु काजु रचाइिआ ॥१॥ हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइिआ बलि राम जीउ ॥ निरभउ भै मनु होइि हउमै मैलु गवाइिआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइिआ हरि गुण गाइिआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अम्तरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मम्गल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए

॥२॥ हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइिआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ सम्त जना हरि मेलु हरि पाइिआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइिआ हरि गुण गाइिआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ सम्त जना वडभागी पाइिआ हरि कथीअै अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीअै मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइिआ हरि पाइिआ बलि राम जीउ ॥ गुरमुखि मिलिआ सुभाइि हरि मनि तनि मीठा लाइिआ बलि राम जीउ ॥ हरि मीठा लाइिआ मेरे प्रभ भाइिआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मन चिम्दिआ फलु पाइिआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइिआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइिआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥

रामकली की वार राइि बलवम्डि तथा सतै डूमि आखी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ दे गुना सति भैण भराव है पारम्गति दानु पड़ीवदै ॥ नानकि राजु चलाइिआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अम्मटतु पीवदै ॥ मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइि जीअ दै ॥ गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥ लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ जोति ओहा जुगति साइि सहि काइिआ फेरि पलटीऐ ॥ झुलै सु छतु निरम्जनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि जि गुर फुरमाइिआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसम्म दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ होवै सिफति

खसम्म दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऔ ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऔ ॥ सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऔ ॥ पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कन्न् मुरटीऔ ॥ दिलि खोटै आकी फिरन्हि बम्न्हि भारु उचाइन्हि छटीऔ ॥ जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऔ ॥ कउणु हारे किनि उवटीऔ ॥२॥ जिनि कीती सो मन्नणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अम्गद दी दोही फिरी सचु करतै बम्धि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जम्गाली ॥ दरि दरवेसु खसम्म दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवम्ड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वम्डीऔ रसु अम्मत्रु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले

मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसम्म नालि जाँ घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइि जिनि गोइि उठाली ॥३॥ होरिंओ गम्ग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥ नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥ माधाणा परबतु करि नेतट बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ चउदह रतन निकालिअनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु छत्रभ सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ सिखाँ पुत्राँ घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ जाँ सुधोसु ताँ लहणा टिकिओनु ॥४॥ फेरि वसाइिआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु तपु सम्जमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वहिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथ न लभई तूम ओहु ठरूरु ॥ नउ निधि नामु निधानु है

तुधु विचि भरपूरु ॥ निम्दा तेरी जो करे सो वम्ञै चूरु ॥ नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥५॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुम्दु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाइओ सत दा जस ह्मदा बाणु ॥ कलि विचि धू अम्धारु सा चड़िआ रै भाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे कुम्डाँ सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जाँ तू सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर

भावसी सो सते दाणु ॥ नानक ह्मदा छत्रभ सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥ धन्नु धन्नु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ सिखी अतै सम्गती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अम्तु न पारावारिआ ॥ जिन्ही तूम् सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥ धन्नु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ गुरु डिठा ताँ मनु साधारिआ ॥७॥ चारे जागे चहु जुगी पम्चाइणु आपे होआ ॥ आपीन्है आपु साजिओनु आपे ही थम्मि खलोआ ॥ आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै

चम्दोआ ॥ उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ जिन्ही गुरू न सेविओ मनमुखा पइिआ मोआ ॥ दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे जागे चहु जुगी पम्चाइिणु आपे होआ ॥८॥१॥

बसम्त की वार महलु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखम्तै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु तटणु तटभवणु मउलिआ अम्मटत फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥१॥ पम्जे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥२॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जम्त सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥३॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक महला ९ ॥

गुन गोबिन्द गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥ बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥ बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥ धनु दारा सम्पति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु सम्गी नही नानक साची जानि ॥५॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥ तनु धनु जिह तो कउ दीओ ताँ सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥ तनु धनु सम्पै सुख दीओ

अरु जिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥ सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइि ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइि ॥६॥ जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥ पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥ घट घट मै हरि जू बसै सम्तन कहिओ पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥ सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥ उसतति निम्दिआ नाहि जिहि कम्चन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥ हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत

आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥ जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥ जिहि माइिआ ममता तजी सभ ते भइिओ उदासु ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥ जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इिह मन साची मानु ॥१९॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥ जिहबा गुन गोबिम्द भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अह्मकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥ जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इिन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥ निसि दिनु माइिआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन

मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥ प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अम्धु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फम्ध ॥२६॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥ माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अम्तरु नही नानक साची मानु ॥२९॥ मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिम्द नामु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥ प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अम्धु ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फम्ध ॥३१॥ सुख मै बहु सम्गी भए दुख मै सम्गि न कोइ ॥ कहु नानक हरि भजु मना अम्ति

सहाई होइ ॥३२॥ जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥ जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥ बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥ करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फम्ध ॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अम्ध ॥३६॥ मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥ नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥ जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥ जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ कहु नानक मन सिमरु

तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ इिन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर हरि अम्तरु नही नानक साची मानु ॥४३॥ एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥ सुआमी को ग्रहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इिह बिधि हरि भजउ इिक मनि हुइि इिक चिति ॥४५॥ तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुम्चर इिसनानु ॥४६॥ सिरु कम्पिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इिह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥ निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह

राखो मन माहि ॥४८॥ जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥ रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ सम्सारु ॥५०॥ चिम्ता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ इहु मारगु सम्सार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥ जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जम्जाल ॥५२॥ दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बम्धन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥ बलु होआ बम्धन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥ सम्ग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥ नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिम्दु ॥ कहु नानक इह जगत मै किन

जपिओ गुर मम्तु ॥५६॥ राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइि ॥ जिह सिमरत सम्कट मिटै दरसु तुहारो होइि ॥५७॥१॥

मुम्दावणी महला ५ ॥ थाल विचि तिम्नि वसतू पईओ सतु सम्तोखु वीचारो ॥ अम्मटत नामु ठाकुर का पइिओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुम्चै तिस का होइि उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम सम्सारु चरन लगि तरीअै सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥ सलोक महला ५ ॥ तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइिओई ॥ तरसु पइिआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि राग माला ॥ राग एक सम्गि पम्च बरम्गन ॥ सम्गि अलापहि आठउ न्नदन ॥

प्रथम राग भैरउ वै करही ॥ पम्च रागनी सम्गि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुम्निआकी गावहि बम्गली ॥ पुनि असलेखी की भई बारी ॥ ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ पम्चम हरख दिसाख सुनावहि ॥ बम्गालम मधु माधव गावहि ॥१॥ ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भाँति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि गाइिन पात्र ॥१॥ दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ सम्गि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोंडकरी अरु देवगम्धारी ॥ गम्धारी सीहुती उचारी ॥ धनासरी ए पाचउ गाई ॥ माल राग कउसक सम्गि लाई ॥ मारू मसतअम्ग मेवारा ॥ प्रबलचम्ड कउसक उभारा ॥ खउखट अउ भउरानद गाए ॥ असट मालकउसक सम्गि लाए ॥१॥ पुनि आइिअउ ह्मिडोलु पम्च नारि सम्गि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल गाइिन तार मिलावही ॥१॥ तेलंगी देवकरी आई ॥ बसम्ती सम्दूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा ॥

सम्गि लाई पाँचउ आरजा ॥ सुरमान्नद भासकर आए ॥ चम्द्रबिम्ब मम्गलन सुहाए ॥ सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ गावहि सरस बसम्त कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी ॥१॥ कछेली पटमम्जरी टोडी कही अलापि ॥ कामोदी अउ गूजरी सम्गि दीपक के थापि ॥१॥ कालङ्का कुम्तल अउ रामा ॥ कमलकुसम चम्पक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पुत्र दीपक के जाना ॥१॥ सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ पाँचउ सम्गि बरम्गन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥ गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिम्धवी अलापी ॥ सिरीराग सिउ पाँचउ थापी ॥१॥ सालू सारग सागरा अउर गोंड गम्भीर ॥ असट पुत्र स्रीराग के गुम्ड कुम्भ हमीर ॥१॥ खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ पाँचउ सम्गि बरम्गन लावहि ॥ सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि

कीनी ॥ मेघ राग सिउ पाँचउ चीनी ॥१॥ बैराधर गजधर केदारा ॥ जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि सम्कर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥१॥ खसट राग उनि गाए सम्गि रागनी तीस ॥ सभै पुत्र रागन्न के अठारह दस बीस ॥१॥१॥